प्रातः क्लास 28-11-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को समझाते हैं। एक तो बाप समझाते हैं जब यहां बैठते हो या देखते हो, चलते हो तो बुधि में यह आता है कि यह सुप्रीम बाप है, टीचर भी है सुप्रीम सद्गुरु भी है। यह दिल में याद आना चाहिए। सिर्फ शिव बाबा भी नहीं उनका आक्युपेशन भी जानना चाहिए। यह बुधि में आने से भी पक्का निश्चय हो जायेगा। क्योंकि यह तो जानते हो सद्गुरु शान्तिधाम भी ले जाते हैं, टीचर भी है सुखधाम भी ले जाते हैं। बाबा तो है ही। भक्ति-मार्ग में उनको और भी बहुत याद करते हैं। सतयुग में कोई याद नहीं करते। क्योंकि वहां तो बाप का सभी कुछ मिला हुआ है। तो उनको याद करने की दरकार ही नहीं। जन्म-जन्मान्तर लौकिक बाप की तो याद रहती ही है। क्योंकि नया2 जन्म मिलता है। बाप समझाते हैं तुम हो साहबज़ादे और साहबज़ादियां। सच्चे2 साहब के सन्तान। सभी ब्रदर्स ठहरे सभी साहबजादे तो जरूर सभी को हक मिलना चाहिए। परन्तु पढ़ते नहीं हैं तो सभी को एक जैसा हक मिल न सके। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही हक मिलता है। राजधानी स्थापन हो रही है ना। भल गांधी जी रामराज्य स्थापन करने का पुरुषार्थ करते थे यह भी उनकी महिमा करते हैं, वाकेवह गांधी ऐसे नहीं कहते थे मैं रामराज्यस्थापन करूंगा वह चाहते थे रामराज्य चाहिए। ऐसे नहीं समझता मैं भी उस रामराज्य में राम बनूं या स्वर्ग में श्री कृष्ण बनूं। नहीं। उनको बनने का ही नहीं है। तो यह ख्याल भी कैसे आये। तुमको तो निश्चय है ना। वह था हद का बापू जी। यह है बेहद का बापू जी। उनसे कोई वरसा मिल न सके। यह तो है निराकार सो भी बेहद का बाप। वह गांधी भी रामराज्य का अर्थ कुछ नहीं समझते थे। शान्ति का राज्य चाहता था। वह तो समझते हैं स्वर्ग को लाखों वर्ष चाहिए। फिर भी उनके लिये भारतवासियों को बहुत ही रिगड़ था। सभी को नहीं हो सकता। तुमको तो बाप के लिये सभी को रिगड़ विठाना है। सभी कहते हैं हम ब्रदर्स हैं। तो वरसा जरूर मिलना चाहिए। भल बाप अक्षर कहते हैं परन्तु जानते कुछ भी नहीं हैं। बाप आते हैं या उनके पास जाना होगा कुछ भी पता नहीं है। क्योंकि वह सभी है भक्ति-मार्ग में। तुम्हारी तो है नालेज। भक्ति को नालेज नहीं कहा जाता। वह है जिस्मानी नालेज। यह फिर है रूहानी नालेज। नालेज में हमेशा एमआबजेक्ट होती है। भक्ति-मार्ग में एमआबजेक्ट कोई है नहीं कि भगवान से क्या मिलेगा? तो जरूर भगवान को आना पड़े। जो अपना परिचय दे ले जाना पड़े। बारात है ना। बच्चे समझते हैं सभी को साथ में ले जायेंगे। अभी संगम युग है तो जरूर नई दुनिया में जाने का है। बच्चों को यह निश्चय है हम नई दुनिया में जाने वाले हैं। गांधी का एमआबजेक्ट कोई ऐसा नहीं था। वह तो जरूर फारेन राज्य को उड़ाने की कोशिश करते थे। फारेन राज्य नहीं चाहता था। अभी तुम जानते हो यह तो बेहद का फारेन राज्य है। सारी दुनिया पर रावण राज्य है। भल क्रिश्चन का राज्य था परन्तु आपस में फूट होने कारण राज्य गवांये दिया। बाप ने समझाया है वह बलवान बहुत हैं। अगर वह आपस में मिल जायें तो सारी दुनिया पर राज्य कर सकते हैं परन्तु बाप समझाते हैं बाहूबल से कोई भी विश्व का राज्य पा नहीं सकता। भारत का प्राचीन योगबल तो नामी-ग्रामी है। यह भी समझते हो क्राईस्ट से 3000 वर्ष पहले हैविन था। मुसलमान भी समझते हैं बहिश्त था। परन्तु कब था किसने स्थापन किया वह कुछ भी नहीं जानें। क्रिश्चन लोग फिर भी कहते हैं पैराडाईज था। भारतवासियों को तो कुछ भी पता नहीं है। वह फिर भी तमोबुधि है। यह तो बिल्कुल ही तमोप्रधान बुधि है ना। भारतवासियों की बुधि और उन्हों की बुधि में कितना रात-दिन का फर्क है। कितनी उन्हों की महीन बुधि है बम्ब आदि बनाने की। विश्व में जिस्मानी शांति लाने लिये कितनी युक्ति रची हुई है ड्रामा के प्लैन अनुसार। बच्चे जानते हैं बाप बैठते हैं उनके सामने सभी बच्चे हैं। यह तो किसको भी याद नहीं करेंगे ना। किसको दृष्टि देंगे क्योंकि बाप इनमें है ना। कहेंगे अच्छा तुम ओपनिंग शिरोमणी कराते हो मुरारजी देसाई द्वारा। तो बच्चों के कल्याण लिये कोशिश करेंगे दृष्टि देने को। फिर भी कहेंगे ड्रामा होगा तो हो सकता है सा0 हो जाये। बाबा यह अनुभव बताते हैं। इनको तो याद में बैठना ही है। बाबा दृष्टि देने वाला भी साथ में है। तो कोशिश

करते हैं, जैसे बहुतों को ब्रह्मा का, कृष्ण का सा० होता है ना। फिर भी बाप कहते हैं ड्रामा में होगा तो। कृष्ण का तो पुजारी है ही। तो कृष्ण का राज्य मिलता है ब्रह्मा। देवी देवताओं का राज्य तो ब्रह्मा द्वारा ही होता है। तो सा० भी हो सकता है। ऐसे नहीं कहते मैं उस बच्चे को दृष्टि देता हूं। उनकी सोल को याद करेंगे। उनको ब्रह्मा का भी सा० हो, फिर कृष्ण का भी सा० हो। तुम तो जानते हो ना हम वैकुण्ठ में जाने वाले हैं। वैकुण्ठ में प्रिन्स प्रिन्सेज बनेंगे। तो सा० भी वही होगा। आगे चल तुम्हारा नाम लिखता जावेगा। चित्र में भी है कैसे दो बिल्लें आपस में लड़ते हैं, मक्खन बन्दर खा लेते हैं। अभी बन्दर आदि की तो बात नहीं। यूं तो समझते हैं यह भी बन्दर थे ना। तुम सभी बन्दर बुधि थे। अभी फिर तुम मक्खन खाते हो देवता बन कर। बन्दरों की सेना भी बरोबर है। तुम रावण पर जीतपाते हो। राम तो बाप को ही कहा जाता है। बाप समझाते हैं कैसी सेना ली है। देवता बना देते हैं। स्वर्ग की स्थापना कर नर्क का विनाश करा देते हैं। उनमें (ओपीनियन करने वाले) तो ज्ञान है नहीं। फिर भी अगर ड्रामा में होगा तो सा० होगा। अक्सर कर के ब्रह्मा और कृष्ण का ही सा० होता है। ऐसे नामी ग्रामी होते हैं तो बाप भी अटेन्शन देते हैं। बाप तो ऐसे बैठे रहते हैं बच्चों को जैसे दृष्टि देते रहते हैं। पाप कट जाये। वैकुण्ठ के मालिक बन जाये। तुम भी समझते हो हम वैकुण्ठ के मालिक बनने वाले हैं। बच्चों को खुशी तो है ना। परन्तु खुशी तब रहे जब कि विचार सागर मंथन करते रहे। देहली में तार जानी है उनको भी कैप्ट करना होता है। वह लोग तो यह समझते नहीं हैं इस लड़ाई के अन्दर पीस मर्ज है। अक्षर ऐसी लिखनी है जो समझे इस लड़ाई के बाद ही पीस स्थापन होनी है। तुम बच्चे जानते हो इस में पीस है' विनाश के बाद ही पीस स्थापन होनी है। यह भी समझते हो शान्तिधाम अलग है, सुखधाम अलग है। यह दुःखधाम अलग है। यह भी समझाना पड़े। भल हैं तो शुद्र। ब्राह्मण नहीं हैं। परन्तु आजकल उनकी बड़ी महिमा है। उनके आने से आवाज अच्छा होगा। अखबार में भी पड़ेगा। बड़े2 आदमी का आवाज भी अच्छा होता है। यह जो ब्रह्माकुमारियों की इतनी ग्लानी होती है, जिस कारण ही अत्याचार आदि होते हैं। वह कैसे निकले उसके लिये यह युक्तियां हैं। कल्प2 यह युक्तियां निकलती हैं। कहते हैं गरीबों को भी यह नालेज देना चाहिए। बाप भी कहते हैं मैं गरीब निवाज हूं। परन्तु साहुकारों के आधार से ही गरीबों का भी बेड़ा पार होगा ना। गरीबों के कारण ही बड़े2 को बुलाना होता है। वह अपना ओपीनियन देंगे तो मनुष्य समझेंगे, आवाज होगा। गरीबों का कोई सुनता थोड़े ही हैं। साहुकारों का आवाज अच्छा होता है। सब समझाना है पवित्रता से कैक्टर्स भी सुधरते हैं। और फिर मनुष्य सृष्टि भी बढ़ेगी नहीं। मुठ भर हो जावेगा। अखबार वाले भी डालेंगे कि ज्ञान यह समझाया गया। यह विनाश ही पीस का निमित्त कारण है। जैसे कोई मरता है तो सन्नाटा हो जाता है। यह भी ऐसा सन्नाटा हो जावेगा। सन्नाटा माना ही शान्ति। यहां कितने ढेर मनुष्य हैं। और सतयुग में बहुत थोड़े होंगे। तो यह समझाना पड़ता है। बड़े2 आदमी का अखबारों में भी डालेंगे। टाईम्स आफ इण्डिया वाले तो कहते हैं हमको परमान मिला हुआ है ब्रह्माकुमारियों का लेख, पैसे आदि मिले तो भी न डालना। ऐसी कुछ आर्डर गवर्मेन्ट की गई है। मायावी गवर्मेन्ट तो है ना। पाण्डव गवर्मेन्ट की तो है, पांच पाण्डव। तुम पाण्डव सेना वा पाण्डव सम्प्रदाय हो। पाण्डव और कौरव सेना गाई हुई है। वह है जिस्मानी सेना, तुम हो रूहानी। तो बाप ने समझाया यहां बैठे हो वैसे वा चलते फिरते हो यह बुधि में याद रहे बाबा हमारा सुप्रीम बाप है टीचर गुरु है। याद करने से ही पाप कट जावेंगे। कहते भी हैं वह नालेजफुल है। जानी जाननहार है। फिर भी कहते देते ठिकर भित्तर में है। बिल्कुल ही वैसे बुधि हैं। तुम भी वैसे बुधि थे ना। अभी समझदार बन विश्व के मालिक बनते हो। अभी विश्व में ही दुःख फिर विश्व में ही सुख शान्ति होगी। नई विश्व में जरूर सुख पुरानी विश्व में जरूर दुःख होगा। पुराने मकान में दुःख न हो तो नया बनावे ही क्यों। यह है बेहद की बात। यह पुरानी पतित दुनिया रहने के लायक नहीं है। विश्वास को नालायक कहेंगे ना। काम का भूत देहअभिमान का

- - - -